नाना प्रकार के पशुओं में गो का वध सब से अधम है। गाय एक ऐसा पशु है जिसके दुग्धामृत से हमें सब प्रकार का सुख मिलता है। अतएव गोवध करना प्रगाढ़ अज्ञान का कार्य है। वैदिक वाङ्मय में **गोभिः प्रीणित मत्सरम्**—आदि वाक्यों से संकेत है कि जो मनुष्य दुग्ध से पोषित होकर गाय का वध करना चाहता है, वह घोर अज्ञान में है। वैदिक शास्त्रों में प्रार्थना है:

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

"प्रभो! आप ब्राह्मण और गोवंश तथा सम्पूर्ण मानवता और जगत् के सुहृद् हैं।" इस श्लोक में गो-ब्राह्मणों के संरक्षण का विशेष रूप से उल्लेख है। ब्राह्मण आध्यात्मिक-शिक्षा के प्रतीक हैं और गोधन परम पौष्टिक आहार प्रदान करता है। अतः इन दोनों का सब प्रकार से संरक्षण करने से सभ्यता-संस्कृति का सच्चा उत्थान हो सकता है। आधुनिक मानवसमाज में भागवतधर्म की शिक्षा उपेक्षित है और गोवध को प्रोत्साहित किया जाता है। इससे स्पष्ट है कि भ्रान्त दिशा में अग्रसर होती हुई मानवता अपने विनाश की ओर बढ़ रही है। जो सभ्यता नागरिकों को अगले जन्म में पशुयोनि की ओर प्रेरित करती हो, वह निश्चित रूप से मानवीय सभ्यता नहीं कही जा सकती। आज की तथाकथित मानवीय सभ्यता रजोगुण और तमोगुण के द्वारा पूर्ण रूप से भटक चुकी है। बड़ा भयंकर युग आ गया है। अतः सब राष्ट्र सावधानी-सहित कृष्णभावना की सुगम पद्धति को अंगीकार करें, जिससे महाविनाश के परम भय से मानवता की रक्षा हो सके।

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च।।१७।।

सत्त्वात्=सत्त्वगुण से; **संजायते**=उत्पन्न होता है; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **रजसः**=रजोगुण से; **लोभः**=तृष्णा; **एव**=निस्सन्देह; **च**=तथा; **प्रमाद**=प्रमाद; **मोहौ**=मोह; **तमसः**=तमोगुण से; **भवतः**=उत्पन्न होते हैं; **अज्ञानम्**=अज्ञान; **एव**=भी; **च**=तथा।

अनुवाद

सत्त्वगुण से सच्चा ज्ञान बढ़ता है, रजोगुण से लोभ होता है और तमोगुण से प्रमाद, मोह और अज्ञान की उत्पत्ति होती है।।१७।।

तात्पर्य

वर्तमान सभ्यता जीवों के लिए सुखावह नहीं है; इसलिए सभी को चाहिए कि कृष्णभावना को अंगीकार करें। कृष्णभावना के द्वारा समाज सत्त्वगुणी बन जायगा और सत्त्वगुण का विकास होने पर जनता यथार्थ ज्ञान से युक्त होगी। तमोगुण में लोग प्रायः पशु-तुल्य हो जाते हैं। उनमें निर्मल दृष्टि का अभाव रहता है। उदाहरण के लिए, वे यह नहीं देखते कि जन्मान्तर में वे उन्हीं पशुओं के द्वारा मारे जायेंगे, जिनका वे अब वध कर रहे हैं। यथार्थ ज्ञान की शिक्षा के अभाव में वे उच्छृंखल हो गए हैं। इस उच्छृंखलता को दूर करने के लिए जनसाधारण को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए,